मान-पत्र

हे ऋषि-राजनीति के पुनः प्रवर्तक-योगी परम्परा के युग प्रणेता! आपका जीवन भारतीय ऋषि-परंपरा की उस अद्भुत श्रृंखला का जीवंत प्रतीक है, जहाँ विरक्ति और अनुरक्ति, अध्यात्म और राजनीति, शास्त्र और शस्त्र, नीति और निष्ठा—सभी एकाकार होकर राष्ट्र-कल्याण की यात्रा का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आप अध्यात्म और लोक मंगल के सेतुपुरुष हैं ।

हे गोरक्षपीठाधीश्वर! आपका अवतरण हिमालय की गोद में स्थित पंचूर ग्राम में हुआ—जहाँ की वायु में ही तप और साधना का संस्कार विद्यमान है। मात्र 22 वर्ष की अवस्था में सांसारिक जीवन से विरक्त होकर आपने गोरक्षपीठ की शरण ग्रहण की, पूज्य महंथ अवैद्यनाथ जी का आशीर्वाद पाया और नाथ पंथ की परंपरा को नूतन जीवन दिया। त्याग, सेवा और समर्पण के इस मार्ग ने आपको केवल एक महंथ ही नहीं बनाया, अपितु करोड़ों जनमानस के प्रेरणा-स्रोत के रूप में स्थापित किया। आप वैराग्य में अनुराग के धनी आध्यात्मिक पुरुषार्थ के साधक हैं ।

हे सनातन परम्परा के आलोक-पुत्र, धर्मनीति और राष्ट्रधर्म के मूर्त प्रतीक ! आपने राजनीति जिसे "अपयश का क्षेत्र" कहा जाता है, उसमें 'राजधर्म' का आदर्श प्रस्तुत किया है। विधान मण्डलों में आपके शब्द शास्त्रों के उद्धरण जैसे गूंजते हैं तो शस्त्रों की गर्जना-सा आत्मविश्वास भी जगाते हैं। आपके व्यक्तित्व में बालक-सा करुण रुदन है तो हिमालय-सा अडिग साहस भी। हिन्दू-हृदय-सम्राट के रूप में जब आपने लोकसभा में प्रवेश किया, तब राष्ट्र ने देखा कि एक संन्यासी भी राजनीति के कठिन पथ पर चलकर जनकल्याण और सनातन संस्कृति की रक्षा कर सकता है। आप धर्म और राजनीति के अद्भुत संयोजन के जीवंत प्रतिमान हैं ।

हे नीति परायण लोकनायक, अविचल संकल्प और अडिग आस्था के पर्याय ! आप अपने हिंदू गौरव-बोध में पूर्णतया निश्चल हैं।आपके लिए धर्म का अर्थ केवल आस्था नहीं, बल्कि कर्तव्य की निष्पक्षता और राजधर्म की साधना है। कानून व्यवस्था की स्थापना हेतु यदि कठोर निर्णय आवश्यक हों, तो आप उन्हें धर्मसम्मत औचित्य के साथ ग्रहण करते हैं। आप वह विरल पुरुष हैं, जो इस धरती पर अपने आध्यात्मिक तेज, नीति-दृष्टि और लोक-कल्याणकारी संकल्प के माध्यम से युगधर्म की पुनर्स्थापना के लिए अवतरित हुए हैं। आप राजधर्म के आदर्श साधक और संवेदनशील जनप्रिय शासक हैं ।

हे जन-मंगल के दृढ़ संरक्षक, प्रजापालक मुख्यमंत्री! भारतीय मनीषा आदिकाल से ईश्वर से यह कामना करती रही है "न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गम् न पुनर्भवं, कामये दुःख तप्तानाम प्राणीनाम आर्त नाशनम् ..." आप ऋषि परम्परा के इस प्रार्थना से भी आगे जाते हैं।आपकी मान्यता है कि दुर्गुणी शासकों के होते हुए प्राणिमात्र के कष्टों की निवृत्ति कल्पना मात्र हो सकती है इसलिए इस महान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यदि 'राज्यपद का कंटकीय मुकुट' धारण करना पड़े तो वह धारित करने योग्य है। आपके लिए राज्यपद भी किसी आसक्ति का कारण नहीं प्राणिमात्र के कल्याण की साधना का नाम ही है। आप हृदयनिष्ठ नेता, सहृदय कर्मयोगी, त्याग-तपस्या और अनुशासन के पर्याय हैं ।

हे भारत के समग्र नेतृत्व के साकार प्रतीक,राष्ट्रीय स्वाभिमान के संवाहक! कानून-व्यवस्था की दृढ़ स्थापना, महिला सुरक्षा के नए आयाम, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार, किसान और श्रमिक के जीवन में आशा की किरण, आधारभूत संरचना के अद्भुत विकास और कोविड जैसे संकटकाल में आपकी करुणा व सेवा—ये सब आपके 'राजधर्म' के स्वर्णाक्षरी अध्याय हैं। आपके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रदेश बन रहा है।

पूज्य महाराज जी! भुड़कुड़ा की इस पुण्य-भूमि पर आपकी उपस्थिति मात्र से भक्ति, शिक्षा, और संस्कृति—तीनों की एकात्म यात्रा का आरंभ होता है। आपका सान्निध्य हमारे लिए केवल सम्मान नहीं, बल्कि एक प्रेरणा, एक संकल्प और एक युगबोध है। भक्ति, श्रद्धा और विनम्रता के साथ हम सभी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपको सुदीर्घ और स्वस्थ जीवन प्रदान करे , जिससे आप निष्काम समाज और मनुजता की सेवा करते रहें ।

हम हैं

श्री महंथ शत्रुघ्न दास जी महाराज
(पीठाधीश्वर, सिद्धपीठ भुड़कुड़ा)

समस्त महाविद्यालय परिवार एवम् सिद्धपीठ के श्रद्धालुगण

प्रो. (बृजेश कुमार जायसवाल)
(प्राचार्य)